www.vino

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक—साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : १६

सोमवार १० फरवरी, '६६

अन्य पृष्ठों पर

अपराजित अन्तरस्वर —कपिल अवस्थी २३४

रोटी और क्रांति —सम्पादकीय २३५

स्नेह के तीन आधार :
प्रेम, आदर, विश्वास —विनोबा २३६

ग्रामदान में तरुण शक्ति का आवाहन —के० अरुणाचलम् २३७

महाराष्ट्र की चिट्ठी २३९

सर्वोदय-पखवारे में पांच जिलादान २४०

परिशिष्ट
"गाँव की बात"

सत्य में समदर्शन है. समाधान है, अन्तःसमाधान है। तेरे अन्तर में एक आवाज उठती है। उसके साथ तू चलता है तो सत्य पर चलता है, ऐसा होगा। फिर तो तुझे गंगा जाने की, तीर्थ नहाने की, जरूरत नहीं। न्याय-निर्णय देते समय न्यायाधीश सत्य पर रहने की कोशिश करता है। जहाँ समत्वयुक्त निर्णय होता है, वहाँ सत्य है। सत्य के लिए समत्व आवश्यक है। सत्य प्राप्त होता है नम्रता, तटस्थता और अनाग्रह से।

—विनोबा

सम्पादक
राधाकृष्ण

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१, उत्तर प्रदेश
फोन : ३१८५

सच्चा प्रजातंत्र या समाजवाद शुद्ध साधनों से ही सम्भव

जबतक प्रजातंत्र का आधार हिंसा पर है, तबतक वह दीन-दुर्बलों की रक्षा नहीं कर सकता।

प्रजातंत्र का अर्थ मैं यह समझता हूँ कि इस तंत्र में नीचे-से-नीचे और ऊँचे-से-ऊँचे आदमी को आगे बढ़ने का समान अवसर मिलना चाहिए। लेकिन सिवाय अहिंसा के ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। संसार में आज एक भी देश ऐसा नहीं है जहाँ कमजोरों के अधिकार की रक्षा कर्त्तव्य के रूप में होती हो। अगर गरीबों के लिए कुछ किया भी जाता है, तो वह कृपा के रूप में किया जाता है।

पश्चिम का आज का प्रजातंत्र जरा हलके रंग का नाजी और फासिस्ट तंत्र ही है। दक्षिण अफ्रीका में प्रजातंत्र क्या अर्थ रखता है? वहाँ का विधान देश के मूल मालिक काले हब्शियों के विरुद्ध गोरों की रक्षा करने के लिए ही गढ़ा गया है।[1]

कोई भी आदमी, जो सक्रिय अहिंसा में विश्वास करता है, सामाजिक अन्याय को—फिर वह कहीं भी क्यों न होता हो—बरदाश्त नहीं कर सकता, वह उसका विरोध किये बिना रह नहीं सकता। जहाँ तक मैं जानता हूँ, दुर्भाग्यवश पश्चिम के समाजवादियों ने यह मान लिया है कि अपने समाजवादी सिद्धान्तों को वे हिंसा द्वारा ही अमल में ला सकते हैं। मैं सदा से यह मानता आया हूँ कि नीच-से-नीच और कमजोर-से-कमजोर के प्रति भी हम जोर जबरदस्ती से सामाजिक न्याय का पालन नहीं कर सकते। मैं यह भी मानता हूँ कि पतित-से-पतित लोगों को भी सही तालीम दी जाय; तो अहिंसक साधनों द्वारा सब प्रकार के अत्याचारों का प्रतिकार किया जा सकता है। अहिंसक असहयोग ही उसका मुख्य साधन है। कभी-कभी असहयोग भी उतना ही कर्त्तव्यरूप हो जाता है जितना कि सहयोग। अपनी बरबादी या गुलामी में खुद सहायक होने के लिए कोई मनुष्य बँधा हुआ नहीं है। जो स्वतंत्रता दूसरों के प्रयत्नों द्वारा—फिर वे कितने ही उदार क्यों न हो—मिलती है, वह उन प्रयत्नों के न रहने पर कायम नहीं रखी जा सकती। दूसरे शब्दों में, ऐसी स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता नहीं है। लेकिन जब पतित-से-पतित भी अहिंसक असहयोग द्वारा अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने की कला सीख लेते हैं, तो वे उसके प्रकाश का अनुभव किये बिना नहीं रह सकते।[2]

जबतक सारे लोग समाजवादी न बन जायँ; तबतक हम कोई हलचल न करें, अपने जीवन में कोई फेरफार न करके हम भाषण देते रहें, पार्टियाँ बनाते रहें और बाज पक्षी की तरह जहाँ शिकार मिल जाय, वहाँ उस पर टूट पड़ें—यह समाजवाद नहीं है। समाजवाद जैसी शानदार चीज झड़प मारने से हमसे दूर ही जानेवाली है।[3]

—मो० क० गांधी

(१) 'हरिजन सेवक' : १८-५-'४०, पृष्ठ : ११३-११४ (२) 'हरिजन सेवक' : २०-४-'४०, पृष्ठ : ८०-८१ (३) 'हरिजन सेवक' : १३-७-'४०, पृष्ठ : १६१।

www.vinoba.in

सामयिक चर्चा

अपराजित अन्तरस्वर

चेकोस्लोवाकिया में पिछले अगस्त '६८ से वादों के छलपूर्ण अतिक्रमण का सिलसिला सोवियत संघ ने कायम किया है। चेक-भूमि पर रूसी सेनाओं ने यह कहकर घुसपैठ की कि, समाजवाद के लक्ष्य से भ्रष्ट होकर चेकोस्लोवाकिया 'लोकतांत्रिक समाजवाद' का प्रयोग कर रहा है। यह ठीक नहीं कि इस प्रकार रूस के प्रभाव-क्षेत्र में जनता खुद सोचने का प्रयास करे। शायद रूस को यह भय सता रहा है कि अगर चेक-नेताओं ने स्वयं अपनी दिशा निश्चित कर ली तो रूसी नमूने पर जो राज्य आज संगठित हैं, कहीं वे भी स्वतंत्र चेता न बन जायें। अगर ऐसा हो गया तो स्वयं रूस की भी साम्यवादी व्यवस्था खतरे में पड़ जायेगी।

रूस की आधुनिकतम शस्त्रयुक्त सैन्य-शक्ति का निःशस्त्र प्रतिकार जिस साहस और दृढ़ता के साथ चेकोस्लोवाकिया की जनता ने किया, वह सारी दुनिया के लिए आश्चर्य और प्रेरणा की बात है। लोग सोचने लगे—कहीं भारत का गांधी वहाँ तो नहीं पैदा हो गया? चेक-युवाशक्ति ने साम्यवादी रूस की जारशाही प्रवृत्ति से क्षुब्ध होकर मानवीय समाजवाद की मुक्ति के लिए गांधीजी के संकेत का अनुसरण किया और अब तक अनेक युवक-युवतियों ने आत्मदाह किये हैं।

२४ जनवरी के "नवभारत टाइम्स" (दिल्ली) ने अपने संपादकीय में लिखा है: "जिस किसी विदेशी सत्ता ने किसी गैर-मुल्क की आजादी की भावनाओं को कुचलने के लिए कदम उठाये, उसने उन भावनाओं से ओत-प्रोत युवकों और उनके आन्दोलन को उसी तरह बदनाम करने की कोशिश की, जैसे आज चेक-जनता और उसके आन्दोलन को लांछित किया जा रहा है। किन्तु इससे कम्युनिज्म स्वयं बदनाम होगा। चेक-युवकों के आत्मदाह से तो रूस का फासिस्टवादी चेहरा और ज्यादा बेनकाब होगा। आहुति के लिए कतार बाँधे खड़े चेक-युवकों का बलिदान अकारथ नहीं जायगा।"

लखनऊ से प्रकाशित होनेवाले हिन्दी दैनिक 'स्वतंत्र भारत' ने २६ जनवरी के अंक में लिखा है: "चेकोस्लोवाकिया के शासक तथा पदारूढ़ कम्युनिस्ट नेता लोकतंत्र के प्रति उदारता की प्रगति का अर्थ जानते हैं, उसका फल भुगत चुके हैं। वे घटनाक्रम की पुनरावृत्ति नहीं करना चाहते, क्योंकि उन्हें अपनी क्षमता का ज्ञान है। अतएव छात्रों से समझ-बूझकर संयम बरतने की प्रार्थना कर रहे हैं। यह स्वर धमकी का नहीं, विवशता का है।"

२४ जनवरी के "दी स्टेट्समैन" (अंग्रेजी दैनिक) ने लिखा है कि "रूस ने आत्मदाही युवकों पर अनेक आरोप लगवाकर विश्व को गुमराह करने की कोशिश की है। सन् १९२२ में मैडम कोलंतेव ने सिलोन से कहा था—अगर तुम कभी सुनो कि मैं क्रेमलिन से चम्मच चुराने के अभियोग में गिरफ्तार की गयी हूँ तो तुम यह मानना कि लेनिन से कृषि-नीति के प्रश्न पर मेरा कुछ मतभेद हो गया है।...कलकत्ते में जहाज से कूदकर राजनीतिक शरण चाहनेवाले तारासोव पर भी तो जहाज के कोष में गबन का आरोप रूस ने लगाया था। चेकोस्लोवाकिया के प्रतिकार का आधुनिकतम उपाय विश्व-चेतना को झकझोर देगा।"

इस देश के सभी समाचार-पत्रों ने, कुछ ने दबी जबान से और कुछ ने मुखरित होकर, चेकोस्लोवाकिया में रूस की आक्रामक कार्रवाई को शर्मनाक कहा है। चेक-युवक यह अच्छी तरह जानते हैं कि संगठित हिंसा का मुकाबला करने की स्थिति में वे नहीं हैं। वे जानते हैं कि हंगरी में सशस्त्र विद्रोह का परिणाम बड़ा दर्दनाक रहा है। और वे यह भी शायद जानते हैं कि जिस प्रकार के समाजवाद—लोकतांत्रिक समाजवाद की स्थापना करना चाहते हैं उसके लिए बाहरी समर्थन मिलनेवाला है नहीं। तब उनके सामने गांधीजी द्वारा निर्दिशित असहयोग का रास्ता ही बचता है कि भूख-हड़ताल करके समूची मानवता को अपनी व्यथा से अवगत करायें। आत्मदाह तो विवशता की पराकाष्ठा है।

दिल्ली के प्रमुख अंग्रेजी दैनिक "दी टाइम्स आफ इंडिया" ने २५ जनवरी की अपनी संपादकीय टिप्पणी में कहा है कि, "हुतात्माओं की माँगों के प्रति चेक जनता एवं नेता पूर्ण सहानुभूति रखते हुए भी असहाय हैं क्योंकि क्रेमलिन इस 'मूड' में नहीं है कि अगस्त '६८ की पूर्व-स्थिति वहाँ कायम हो। रूस को शंका है कि चेकोस्लोवाकिया के नये प्रयोगों का प्रभाव पूर्वी जर्मनी, पोलैण्ड और अक्राइन पर न पड़ जाय और वहाँ पर भी रूस का प्रभाव समाप्त हो जाय।" टिप्पणी में हुतात्माओं के प्रयास का समर्थन करते हुए कहा गया है: "उनका तरीका न तो कायरतापूर्ण है और न राष्ट्रद्रोही। यह देर से ही सही, किन्तु प्रभावशाली सिद्ध होगा।"

२ फरवरी के साप्ताहिक "दिनमान" ने लिखा है: "रूसी नेताओं को भी अब यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि यदि उन्होंने अपना रवैया नहीं बदला तो चेक जनता का मुखर विरोध उनकी साख को ले डूबेगा।"

३० जनवरी को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि चेकोस्लोवाकिया की आत्मदाह की घटनाएँ भारतीय वीरता की परम्पराओं के अनुरूप हैं। हम आज उन्हें उसी प्रकार स्मरण कर रहे हैं, जैसे कि दुनिया के उन तमाम शहीदों को, जिन्होंने अपने मुल्कों के लिए कुर्बानियाँ दी हैं। चेक युवकों की कुर्बानी का सारे विश्व की युवा चेतना पर प्रभाव पड़ रहा है।

रूस की शस्त्र-शक्ति के अहिंसक प्रतिकार के सन्दर्भ में घटित ८ आत्मदाह की घटनाओं से व्यथित होकर राजनीति एवं सत्तात्मक प्रपंचों से दूर ९ तरुण सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने—जिनमें डेनमार्क के भी दो युवक-युवती थे—गांधी-समाधि पर ३० जनवरी की संध्या ५॥ बजे से २४ घण्टे का प्रतीकात्मक सामूहिक उपवास किया। विश्व की युवा चेतना की यह माँग होनी चाहिए कि चेकोस्लोवाकिया में आत्मदाह के लिए मजबूर करनेवाली परिस्थिति शीघ्र समाप्त हो।—कपिल अवस्थी

www.vinoba.in

सम्पादकीय

रोटी और क्रान्ति

"सर्व की क्रान्ति महज एक शब्दजाल है। आप लोगों ने तथ्य का सामना करने से निकल भागने का एक सुन्दर-सा सिद्धान्त गढ़ लिया है। जिनका पेट तक नहीं भरता, जिनकी जिन्दगी का हर पल यातनाओं का शिकार है, उनसे आप अपेक्षा रखते हैं कि वर्गनिराकरण के लिए आपकी तथाकथित शान्तिपूर्ण क्रान्ति के वाहक बनें, विवेक से काम लें, खुद त्याग करें। जिनका पेट ही नहीं भरता, जिनके शरीर को बचपन से बुढ़ापे तक पोषण ही नहीं मिलता वे भला खुद क्या सोच पायेंगे?" आवेशपूर्ण आवाज में अपनी बात रखी।

हमारी चर्चा का विषय था कि समाज को वर्गों में विभाजित करके जो क्रान्ति होगी उसमें से प्रतिक्रान्ति का जन्म अवश्यम्भावी है। सच बात तो यह है कि उसे क्रान्ति कहना भी इस शब्द का दुरुपयोग-सा है। वह तो मात्र दो प्रकार की परिस्थितियों की अदलबदल है। परिस्थिति का समग्र और बुनियादी परिवर्तन हो, तब न उसे क्रान्ति कहेंगे?

लेकिन हमारे मित्र अपनी बात पर अडिग थे। भारत आने पर सबसे पहले दिल्ली की आलीशान इमारतों और अत्यन्त व्यस्त सड़कोंवाली भारत की तस्वीर उन्हें दिखाई पड़ी थी, और उसके बाद उन्हें दिखाई पड़ी थी अधटूटी झोपड़ियोंवाली बियाबान जंगलों की मायूस और सूनी जिन्देगीवाली गाँवों की तस्वीर! भेद की इतनी लम्बी-चौड़ी खाई भारतीय जीवन में है, इसका उन्हें अन्दाज भी नहीं था। बौखला-से गये थे, और बार-बार यही कहते थे कि, "सबसे पहले इनका पेट भरना चाहिए, तन ढकना चाहिए, सर्दी, धूप, बरसात से बचने के लिए आश्रय होना चाहिए। इतना हो जाय, तब उसके बाद शान्तिपूर्ण क्रान्ति की बात सोचनी चाहिए। लेकिन अभी तो जो असन्तोष की आग यहाँ सुलग रही है, उसे और भी धधकाना चाहिए।"

मैंने कहा, "आपकी बात से हमें कोई इनकार नहीं है, अगर आग धधके, सब कुछ जल जाय और उसके बाद क्रान्ति के अरुणोदय में नये जीवन की किरणें फूटती दिखाई दें! लेकिन यह चेकोस्लोवाकिया की घटनाएँ किस बात की ओर संकेत कर रही हैं? क्या आपको यह नहीं दीखता की रोटी, वस्त्र, आश्रय और सुरक्षा आदि के एवज में मनुष्य की चेतना गिरवी रख ली जाती है, विपन्नता के कारण पैदा हुई असन्तोष की आग को भड़कानेवाले खुद ही एक नये—पहले से अधिक दमनकारी—अधिष्ठान के अंग बन जाते हैं? माना कि अभावग्रस्त जिन्दगी में पहली माँग रोटी की है, लेकिन क्या रोटी मात्र के लिए ही मनुष्य जीवित रह सकता है, और क्या सत्ता के दबाव में मानवीय चेतना कुण्ठित होती जाय, तो उसे हम क्रान्ति के बाद नयी जिन्दगी का आरम्भ कह सकेंगे? अगर ऐसा होता तो मार्क्स को क्रान्ति के लिए 'मुक्ति' का उद्घोष और 'मुक्त मनुष्यों का मुक्त भाईचारा' जैसा अन्तरचेतना को उद्बोधित करनेवाला लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती!"

"आप विषय को तोड़-मरोड़ रहे हैं। सवाल यह है कि जिसे भरपेट रोटी खाने को नहीं मिलती, उसके अन्दर मानवीय चेतना और संवेदना कहाँ से पैदा होगी?" मेरे डेनिश मित्र ने कुछ खीझ के साथ कहा।

"तो क्या आप सोचते हैं कि रोटी-कपड़े की चिन्ता से मुक्त सारी सुख-सुविधाओं के बीच रहनेवाले व्यक्ति में ये गुण अधिक विकसित हैं और विपन्न लोगों में हैं ही नहीं? अगर ऐसा होता तो एक बीघा जमीन रखनेवाला गरीब आदमी भी भूदान में अपनी जमीन हर्गिज नहीं देता। लेकिन हमारा अनुभव यह है कि गरीब लोगों में भी अपने से गरीब के लिए दान देने की प्रवृत्ति है, भावना है। और हम इसे मानवीय चेतना और संवेदना का ही एक रूप मानते हैं। इस पूरी क्रान्ति-योजना में सोचने और संयोजन करने का काम कुछ थोड़े-से समझदार लोगों का रहा, जो क्रान्ति के अगुवा बने। दुनिया में हुई साम्यवादी क्रान्तियों का अनुभव यह साबित करता है कि यह जो संयोजक समुदाय बना, वह संगठित होकर सोचने का काम अपने जिम्मे ही रखना चाहता है, क्रान्ति की सफलता के बाद के विकसित नये उत्पादक समुदाय को अपनी जिन्दगी और समाज के ढाँचे के बारे में कुछ नया सोचने की बात को प्रतिक्रियावादी लक्षण मानता है। शायद उनकी दृष्टि में उनके बनाये साम्यवादी ढाँचे में कहीं-न-कहीं जड़ जाने से अधिक मनुष्य की कोई हैसियत नहीं! क्या फर्क हुआ मनुष्य की हैसियत में—चाहे वह पूँजीवादी ढाँचा रहा, चाहे वह साम्यवादी ढाँचा रहा—अगर अधिष्ठान का ही पुर्जा उसे हर हालत में बना रहना पड़ा तो?"

"लेकिन इससे और आपकी सर्व की क्रान्ति से क्या अनुबन्ध है?" मित्र ने पूछा।

"बात यह है कि हम मनुष्य को मात्र एक पुर्जा मानकर नहीं चलते, न ही हम उसे मात्र रोटी के लिए जीनेवाला प्राणी मानते हैं। हम मानते हैं कि हर व्यक्ति के अन्दर—मात्राभेद भले हो—मानवीय चेतना और संवेदनशीलता है। जिस तरह एक तथ्य यह है कि वह बिना रोटी के नहीं रह सकता, उसी तरह एक तथ्य यह भी है कि वह केवल रोटी के आधार पर जिन्दा नहीं रह सकता। वह अपने अलावा दूसरों के सुख-दुख का अनुभव करता है। अगर असंतोष की आग को धधकाकर उसमें जलाने की शक्ति पैदा की जा सकती है तो इस संवेदनशीलता को विकसित कर इसके द्वारा हर मनुष्य के अन्दर परिवर्तन की शक्ति पैदा क्यों नहीं की जा सकती? आरोपित क्रान्ति की बुनियाद में ही प्रतिक्रान्ति निहित है, लेकिन स्वयं की चेतना से स्वीकारी हुई क्रान्ति में प्रतिक्रान्ति की नहीं, निरन्तर क्रान्ति-प्रवाह के जारी रहने की अनुकूलता है; इसीलिए हम न तो मनुष्यों को वर्गों में विभाजित करते हैं, और न खुद उनके लिए क्रान्ति का नायक बनते हैं। हम क्रान्ति की चेतना जगाते हैं, और हर मनुष्य को उसका नायकत्व सौंप देते हैं।"•

स्नेह के तीन आधार : प्रेम, आदर, विश्वास

हम तो ऐसी सभाओं की तरफ सत्संग के खयाल से देखते हैं। यह एक सत्संग है। आप इकट्ठे होते हैं तो काम की चर्चा करता हूँ। ऐसा बेकार कौन है यहाँ सिवाय बाबा के ! कई लोग बाबा के पास मुलाकात के लिए आते हैं तो उनको गिना हुआ समय मिलता है—२ से २॥, ३-३५ से ३-४५ तक। लेकिन ऐसी जो बातचीत की जाती है, वह घण्टों की जाती है।

भारत में लगभग तीन सौ जिले हैं, उनमें से दो-ढाई सौ जिलों में बाबा के परिचित लोग हैं। ७०-७५ जिले ऐसे हैं, जिनमें खास परिचय का मनुष्य नहीं मिला है, याने याद में नहीं है। तो उन मनुष्यों का स्मरण किया करता हूँ। बाबा का कार्यकर्ता होगा, तो इस प्रकार के स्मरण करने से कुछ संदेश पहुँचाया जा सकता है। और, कुछ लाभ तो स्मरण करनेवाले को होता ही है। जिसका सम्पर्क किया जाता है, उसको भी होता है, ऐसा अनुभव कई दफा होता है। इस वास्ते बाबा के सामने जाकर बात रखने का भी अपना एक महत्त्व है। बाबा सूक्ष्म में है, इसलिए द्रष्टा बनकर बारीक-से-बारीक चीज भी देख लेता है, जो अपने काम के साथ सम्बन्धित है, जो सम्बन्धित नहीं हैं, ऐसे सवालों पर केवल थोड़ा देख लेता है। इसलिए बाबा के बहुत करके जो भी कोई सम्बन्धित विषय हैं, उनपर बाबा 'अप टु डेट' है। कुछ ऐसे विषय हैं, जिनके बारे में बाबा को जानकारी नहीं है। जो भी सर्वसामान्य विषय लेकर आता है, उनको ऐसा अनुभव होता है कि बाबा को 'अप टु डेट' जानकारी होती है। अब जैसे 'जर्मन ट्रिब्यून' बाबा के पास आता है तो बाबा देख लेता है। उसको उससे जर्मनी की करीब-करीब पूरी जानकारी मिल जाती है। इस तरह से जो-जो आते हैं, उनसे वाकिफ रहने की बाबा कोशिश करता है।

किसीके मरने के बाद उसके बारे में लेख लिखा जाता है। बाबा कहता है, मरने के बाद नहीं, मरने के पहले ही लिखो। इससे एक-दूसरों की जानकारी एक-दूसरों को होगी। चित्र के साथ उनका जीवन-चरित्र थोड़े में दिया जाय, उससे बड़ा लाभ होता है। अपने आन्दोलन में जो काम करते हैं, उनमें बहुत-से साधु पुरुष कहने लायक हैं। गीता में जो कसौटी आती है कि अपने लिए ज्यादा चाहते नहीं—फलत्याग, ऐसे जितने भी कार्यकर्ता होंगे, सबके-सब होंगे ऐसा नहीं कहना चाहता, लेकिन फिर भी एक समूह है, उनको प्रतिष्ठा तो मिलनेवाली है नहीं।

इन लोगों का कोई नाम होनेवाला नहीं है और इनके बारे में पेपर भी मरने के बाद ही लिखते हैं। और उन्हें गृह-सौख्य मिलेगा यह भी सम्भव नहीं है। महाराष्ट्र का एक कार्यकर्ता लिखता है कि मुझे आसाम भेज दीजिए। आसाम चले जायँ तो वह भी बचे और ये भी बचें ! अपने प्रान्त में रहकर अपने घरवालों की दशा देखने का जो मौका मिलता है, उससे तकलीफ होती है। मैं हमेशा कहता हूँ कि उनके बाल-बच्चे उनका काम करनेवाले

विनोबा

नहीं हैं, यह पक्की बात है। कारण यह है कि काम करते हुए उनकी अत्यन्त उपेक्षा होती है। माता अपने बेटे से कहती है कि जो भी तू हो, लेकिन अपने बाप के समान बेवकूफ मत बनो ! माता की दुर्दशा बेटा देखता है। हालत यह है कि घर की ऐसी दुर्दशा और बाहर भी मान की आशा नहीं। अब एकनाथ भगत,, कितना उत्तम कार्यकर्ता ! वह बीमार रहा, फिर भी काम करता रहा। दूसरों ने भी सलाह नहीं दी। काम बन्द नहीं करवाये। मरने तक काम में लगा रहा। अब मरने के बाद स्मारक बनायेंगे, मरने तक दया नहीं की। ऐसी हालत में बहुत सारी हमारी कार्यकर्ताओं की 'मेजारिटी' है।

हम अपने साथियों को सुझाव देते हैं कि हम लोग एक-दूसरों पर अत्यन्त स्नेह करना सीखें। स्नेह में तीन चीजें आती हैं : (१) प्रेम, (२) आदर और (३) विश्वास। ये तीनों मिलकर स्नेह बनता है। हम देखते हैं कि माता-पिता, पति-पत्नी, माँ-बेटे, इनका बहुतों का आपस-आपस में प्रेम तो सामान्यतया होता है, लेकिन आदर नहीं होता है। कुछ ऐसे परिवार होते हैं, जिनमें प्रेम और आदर हो, लेकिन विश्वास होता है ऐसी बात नहीं। पति को पत्नी की अकल पर विश्वास नहीं और पत्नी को पति की अकल पर विश्वास नहीं। पिता को बेटे की अकल पर विश्वास नहीं और बेटे को पिता पर विश्वास नहीं। प्रेम है, लेकिन विश्वास नहीं। आदर तो ऐसी वस्तु हैं, जो जरूरी है। इकट्ठे होने से एक-दूसरे के दोष देखने को मिलते हैं। दोष जो हैं, वे प्रकट होते हैं। नजदीक देखनेवाले को हमेशा लगता है कि जमीन ऊबड़-खाबड़ है, लेकिन दूर से देखते हैं तो सारी पृथ्वी गोल दिखती है। उसमें पाँच मील ऊँचे पहाड़ हैं और पाँच मील गहरे समुद्र हैं, उन दोनों के बावजूद विज्ञान कहता है कि पृथ्वी गोल है। नीचाई-ऊँचाई उसकी छोटी चीज लगती है। इस वास्ते नजदीक देखने पर ऊबड़-खाबड़ दिखती है। हम एक-दूसरों के नजदीक आते हैं, आना पड़ता है। घर में प्रेम, आदर और विश्वास हो, ऐसे घर आपको बहुत थोड़े मिलेंगे। प्रेमवाले ज्यादा परिमाण में मिलेंगे। प्रेम और विश्वास हो यह कुछ मिल सकते हैं, लेकिन प्रेम, विश्वास और आदर, तीनों चीज इकट्ठी हों, ऐसे परिवार तो बहुत कम मिलेंगे।

यह अपना परिवार ऐसा बने कि जो एक-दूसरे पर प्रेम, आदर और विश्वास करता हो, बावजूद दोष-दर्शन के। इस विषय में हमारी तीन अवस्थाएँ हो चुकीं। बचपन में मैं ज्यादा तार्किक था। अभी भी कुछ लोग कहते हैं कि मैं तार्किक हूँ। तो किसीमें दोष हो तो तुरन्त दिखता था। फिर सन्तों ने सिखाया कि दूसरों के दोष देखना नहीं, अपने दोष देखना। और दूसरे का गुण देखना है तो बढ़ाकर देखना और अपने दोष देखते हैं तो बढ़ाकर देखना।...यह बार-बार पढ़ा तो असर हुआ, लेकिन समझ में नहीं आया कि दूसरे का गुण है तो छोटा, लेकिन बड़ा क्यों मानना ? तो बापू के साथ इसकी चर्चा हुई मेरी। उन्होंने कहा—तू तो गणित जानता है। मैप में स्केल होता है १ इंच = ७० मील। मैं देखता हूँ एक इंच ही, लेकिन मानेंगे ७० मील। हमने अपनी आँखों का स्केल ऐसा

बनाया है कि दूसरे का दोष छोटा होने पर भी बड़ा दिखता है और गुण बड़ा होता है, फिर भी दिखता कम है। अपना गुण छोटा है, लेकिन दिखता है बड़ा। इस वास्ते उस पैमाने को उल्टा करने से 'पर्स्पेक्टिव' ठीक होता है। यह हमें उन्होंने गणित की भाषा में समझाया। मुहम्मद पैगम्बर ने एक कहानी ईसा मसीह के बारे में कही। अपने साथियों से ईसा मसीह के गुण की चर्चा करते हुए कहा कि विश्वास ऐसा होना चाहिए, जैसा ईसा का है। एक दफा वह रास्ते में जा रहे थे। सामने कुछ दूरी पर दो आदमी जा रहे थे। एक ने दूसरे को पकड़कर उसकी जेब में हाथ डालकर पैसे ले लिये और वह आगे चलने लगा। ईसा ने यह देखा। तो जल्दी-जल्दी चलकर उस मनुष्य के पास पहुँच गये और जिसने जेब में हाथ डाला था और पैसे ले लिये थे उससे पूछा, 'तूने क्यों पैसे ले लिये? उसने क्या अपराध किया था?' उसने कहा—'भगवान का नाम लेकर कहता हूँ, मैंने उसका पैसा नहीं लिया।' 'भगवान का नाम लेकर कहता हूँ', ऐसा कहा तो एकदम ईसा बोले—'भगवान का नाम लेता है तो मैं अपनी आँख से भगवान के नाम पर ज्यादा विश्वास रखता हूँ। मेरी अपनी आँखें मुझे धोखा दे सकती हैं। इसलिए भगवान के नाम पर अधिक विश्वास रखता हूँ।' ऐसा विश्वास होना चाहिए। ऐसा विश्वास अगर आप रखेंगे तो बुरा मनुष्य तुरन्त बदल जाता है। यह मिसाल हमने पढ़ी। धीरे-धीरे कम होते-होते दो-तीन अवस्थाएँ ऐसी हो गयीं। अब हम किस भूमिका में काम करते हैं, वह आपके सामने रखता हूँ। हम समझते हैं कि दूसरे के गुण ही गाना और अपने भी गुण ही गाना। मुझमें एकाध गुण है वह मैं गाऊँगा। मेरा भी गुण ही गाऊँगा, दोषों का उच्चारण नहीं; न दूसरे का, न अपना ही। मुझे कई लोग कहते हैं कि बाबा तो बड़ा पवित्र है। वह सातत्य की मिसाल है। कुछ लोग समझते हैं कि बाबा घमण्डी बन गया दिखता है। बड़ा मजा आता है, क्योंकि जो दोष हैं वह अगर हम देखेंगे तो वह देह के होते हैं, आत्मा के नहीं होते। दोष तो देह के साथ चले जायेंगे। हम समझेंगे कि जो जानेवाला देह है, उसके साथ वे चले जायेंगे।

ग्रामदान में तरुण शक्ति का आवाहन

[तमिलनाडु का नया सफल प्रयास]

यह सर्वविदित है कि तमिलनाडु सर्वोदय-संघ ने कुछ महीने पहले ता० २ अक्तूबर १९६९ तक तमिलनाडु-राज्यदान का संकल्प किया है। उस दिशा में हर सम्भव प्रयत्न किया जा रहा है। परन्तु सबसे बड़ी कठिनाई जो उपस्थित हो रही है वह है मनुष्य-शक्ति की, कार्यकर्ताओं के अभाव की। खादी-ग्रामोद्योग के काम में लगभग १५०० साथी लगे हुए हैं और वह काम इतना बड़ा और गहरा है कि इन साथियों के लिए वह काम ही बहुत है, बल्कि दिन-ब-दिन उसमें ही अधिकाधिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता पड़ती है। बड़ी मुश्किल से मुट्ठीभर कार्यकर्ताओं को उस काम से मुक्त कर सके हैं और ग्रामदानी क्षेत्रों में सब जगह इन्हीं लोगों का उपयोग करना पड़ रहा है। इसका अर्थ ही है कि कार्यकर्ताओं का इधर से उधर आना-जाना बराबर चलता है, जिससे प्रवास-खर्च भी अनिवार्य रूप से बढ़ता है। साथ ही ग्रामदान-आन्दोलन भी जोर नहीं पकड़ पाता है कि निश्चित समय के अन्दर घर-घर हम जा सकें और प्रत्येक भाई-बहन तक विचार पहुँचा सकें। यह हम साथियों के लिए बड़ी चिन्ता का विषय बना रहा। श्री भूपति जिला रेविन्यू-अधिकारी थे और अब सेवानिवृत्त होकर सर्वोदय के काम में लगे हुए हैं। वे इस वक्त पूर्वी रामनाड सर्वोदय संघ के अध्यक्ष हैं। वे भी खादी-ग्रामोद्योगों के काम की उपेक्षा नहीं कर सकते थे, क्योंकि उस काम के रुकने से आज लोगों को जो रोजी-रोटी उससे मिल रही है वह भी खतम हो जाती और दुःस्थिति बढ़ जाती। तिसपर यह क्षेत्र सारे तमिलनाडु में विशेष पिछड़ा हुआ है। इसलिए भावी सुख की कल्पना में आज की व्यवस्था को तोड़ने की हिम्मत कोई नहीं कर सकता और आज की माँग को टाल नहीं सकता। फिर भी श्री भूपति के मन में क्षेत्र के कोने-कोने तक ग्रामदान का संदेश पहुँचाने की तीव्र उत्कण्ठा भी रही है।

स्थानीय नेता इस आन्दोलन के अनुकूल हैं। सुलभ ग्रामदान आन्दोलन की हर बात से वे सहमत हैं। आन्दोलन में भाग लेने के विषय में वे अपनी ओर से भी जनता को अपील करते रहते हैं। लेकिन समस्या यह है कि व्यक्तिशः प्रत्येक घर कैसे पहुँचा जाय और हर व्यक्ति के हस्ताक्षर कैसे लिये जायँ। इसके लिए बड़ी संख्या में मानव-बल की जरूरत है। इस तीव्र आवश्यकता के बीच श्री भूपति को एक नयी बात सूझी कि देहाती क्षेत्र में ऐसे कई युवक हैं, जो हाईस्कूल या कालेज की पढ़ाई पूरी करके किसी सरकारी नौकरी या शाला की मास्टरी की प्रतीक्षा में अपने घरों में खाली बैठे रहते हैं, उन्हें इस काम के लिए क्यों न आवाहन किया जाय। फौरन पंचायत-समितियों के मार्फत उन्होंने उन युवकों के नाम एक अपील निकाली। और सौ से ज्यादा युवक अपनी सेवाएँ देने आगे आये। उनको बुलाया गया। उनसे बातें कीं और उनमें से सौ युवकों को चुन लिया गया। प्रखण्ड के प्रमुख गाँवों में उनके लिए एक त्रिदिवसीय

तुलसीदासजी ने कहा है—सिर धुनि-धुनि पछताही···गुण आदमी का स्वभाव है। एक-एक आत्मा में एक-एक गुण है, इस तरह से सब इकट्ठा होकर भगवान का होता है। हरएक को एक-एक गुण देकर उसने भेजा, फिर भी बहुत सारे उसके पास बचे हैं। जो गुण दिया गया है, वह भगवान का गुण है, इस वास्ते प्यार से गुण गाना।

आसाम के महान साधु माधव देव ने मनुष्य के चार प्रकार बताये हैं—अधम मनुष्य वह होता है, जो केवल दोष देखता है। मध्यम मनुष्य वह होता है जो विचार करके गुण और दोष, दोनों लेता है। उत्तम वह होता है जो केवल गुण लेता है। ये तीन प्रकार हो गये। लेकिन उत्तमोत्तम पुरुष वह है, जो गुण का विस्तार करता है। यह आजकल हमको बड़ा आनन्ददायी मालूम होता है कि गुणगान करो।

(ग्रामदान-अभियान-संचालन उपसमिति के सदस्यों के बीच) राजगीर, पटना : ८-१-'६९।

शिविर आयोजित कर ग्रामदान के विषय में उन्हें बुनियादी जानकारी दी गयी। अन्तिम दिन क्षेत्र के शिक्षक और प्रखण्ड के अधिकारी भी शिविर में शामिल हुए। इस संयुक्त सभा में कार्यक्रम की योजना बनी। फिर योजना के अनुसार टोलियाँ काम पर लग गयीं। पाँच दिन के अन्दर दान-पत्रों पर हस्ताक्षर ले लिये गये। गाँवों की दीवारों पर पोस्टर चिपकाये गये। पढ़े-लिखे लोगों को पर्चे बाँटे गये। अन्त में देखा गया कि पर्याप्त संख्या में भूस्वामी अपनी-अपनी भूमि का स्वामित्व ग्रामसभा को सौंपने को राजी हो गये थे। तब प्रखण्डदान घोषित किया गया।

दूसरे जिलों में भी कार्यकर्ताओं की बैठकें बुलायी गयीं और श्री भूपति ने पूर्वी रामनाड के अपने अनुभव सुनाये। यह नयी प्रक्रिया सबको पसन्द आयी और अपने-अपने क्षेत्र में इसे आजमाने के विचार से सब लौटे। पश्चिमी रामनाड, मदुराई और त्रिची जिलों में उसका प्रयोग किया। आज कुल मिलाकर इन तीनों जिलों में नौ सौ युवक ग्रामदान के काम में लगे हुए हैं। आन्दोलन में तेजी आ रही है। सरगरमी बढ़ रही है। विरोध शान्त हो रहा है। सर्वोदय-पक्ष के भीतर दक्षिण के तीनों जिले पूरे हो जायेंगे। पुराने की जगह नया ले लेगा। ता० १५ फरवरी के बाद उत्तरी जिलों की ओर हम बढ़ेंगे। हो सकता है कि संकल्पित तिथि से पहले ही संकल्प की पूर्ति हो जाय।

मैं इन युवकों में से कइयों से मिला हूँ। उनमें बहुत उत्साह है। वे इसी काम में आगे भी लगे रहने के इच्छुक हैं। सर्वोदय-मण्डल और सर्वोदय संघ को अब चिन्ता नहीं रही है कि ग्रामदान के आगे के पुष्टि तथा विकास के काम के लिए इन युवकों का सहयोग कैसे प्राप्त किया जाय। हमें ऐसे कार्यकर्ताओं की बहुत बड़ी संख्या में आवश्यकता है, जो समाज के लिए अपना सर्वस्व दें और समाज से अपनी कम-से-कम आवश्यकता भर के लिए लें। मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही कोई-न-कोई मार्ग मिल जायगा।

—के० अरुणाचलम्

लोकतंत्र की बुनियाद : निर्भीक, विवेकयुक्त मतदान

गांधीजी ने अपनी 'आखिरी वसीयत' में मतदाता के शिक्षण पर सबसे अधिक जोर दिया था। चुनाव-कार्य शुद्ध, शान्तिपूर्ण और न्याय पर आधारित रहे तब ही लोकतंत्र टिक सकता है। लोकतंत्र की सबसे महत्त्व की और बुनियादी कड़ी मतदाता है। मतदाता का कर्तव्य है कि वह मतदान के अपने अधिकार का निर्भीकता से, स्वतंत्र रहकर तथा विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करे। विभिन्न राजनैतिक पक्षों, संगठनों एवं चुनाव के लिए खड़े होनेवाले व्यक्तियों की भी यह जिम्मेदारी है कि वे अपने-अपने हितों के बावजूद मतदाता के इस कर्तव्य-पालन में किसी प्रकार की बाधा या प्रतिकूलता पैदा न करें।

इसके लिए निम्न न्यूनतम आचार-संहिता का पालन किया जाय :—

(१) उद्देश्य, नीति, कार्यक्रम तथा उसके द्वारा किये गये कार्यों के आधार पर दूसरे पक्ष की आलोचना करें। दूसरे पक्ष के उम्मीदवार या सदस्य के निजी जीवन को लेकर आलोचना न करें।
(२) जनता से झूठे वादे न करें। (३) वोट प्राप्त करने के लिए गलत व निन्दनीय तरीकों का आश्रय न लें।
(४) विभिन्न जातियों, धर्मों, वर्गों, भाषाओं और प्रान्तों के लोगों के बीच घृणा पैदा करनेवाली या हिंसक भावना उभारनेवाली कोई बात न करें।
(५) विचार-प्रचार व अन्य कार्यक्रम इस तरह आयोजित करें कि दूसरे की स्वतंत्रता में बाधा न पहुँचे।
(६) किसी प्रकार की हिंसा और अशान्ति का वातावरण न बनायें।
(७) सोलह साल से कम उम्र के बच्चों का उपयोग चुनाव-प्रचार में कतई न करें।

इस सन्दर्भ में हरएक मतदाता का भी यह धर्म हो जाता है कि वह—

१—अपने मन की पवित्रता का ख्याल रखे, २—उम्मीदवार के गुणावगुण को देखकर मत दे,
३—मत को किसी भी प्रलोभन के कारण न बेचे, ४—किसी भय से भी मत का गलत उपयोग न करे,
५—सही व्यक्ति न मिले तो वोट दे ही नहीं, ६—हिंसा और अशान्ति का प्रसंग न आने दे।

राष्ट्रीय गांधी-जन्म शताब्दी-समिति की गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति, दुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर–३ (राजस्थान) द्वारा प्रसारित।

www.vinoba.in

प्रादेशिक पत्र

महाराष्ट्र की चिट्ठी

गत १० जनवरी से १० अप्रैल तक महाराष्ट्र प्रदेश के १०० प्रखण्ड के १० हजार गाँवों में ग्रामदानमूलक ग्रामस्वराज्य का विचार पहुँचाने का संकल्प कार्यकर्ताओं ने किया है। इस संकल्प-पूर्ति के लिए विभिन्न स्थानों में कार्य प्रारम्भ किया गया है।

कुलाबा : कुलाबा जिला सर्वोदय-सम्मेलन १५-१६ फरवरी को हो रहा है। सम्मेलन में जिला सर्वोदय-मण्डल की स्थापना करके ग्रामदान-का क्रम की योजना बनेगी। सर्वश्री ठाकुरदास बंग और मधु रावकर ने वर्षारंभ के समय तीन दिन की प्रचार-यात्रा में पूर्व-प्राप्त १२७ ग्रामदान और आगे के काम की चर्चा विभिन्न स्तरों के लोगों से करते हुए ८०० रु० की सहायता-निधि संकलित की।

भंडारा : हाल ही में श्री रा० कृ० पाटील ने इस पूरे जिले में दौरा कर हरेक प्रखण्ड में आयोजित ग्रामस्वराज्य-सम्मेलन का मार्गदर्शन किया। ग्रामदान-यात्रा के लिए १२५ ग्रामदान-सैनिकों ने नाम लिखाये। शिक्षकों में प्रचार करने के लिए सुश्री निर्मला बहन देशपांडे के दौरे का भी आयोजन किया गया है।

नागपुर : नाग-विदर्भ चरखा संघ के पाँच कार्यकर्ता प्रचार-कार्य कर रहे हैं। १० जनवरी से कार्यकर्ताओं की पाँच टोलियाँ ग्रामदान-अभियान के लिए निकल पड़ी हैं।

यवतमाल : दारव्हा तहसील के ४० कार्यकर्ताओं, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों और शिक्षकों की एक सभा हुई। पदयात्रा की पूर्वतैयारी में सब लोग लगे हैं। जिले की पदयात्रा में श्री अप्पासाहब पटवर्धन, महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल के मंत्री श्री वसंतराव बोंबटकर आदि का मार्गदर्शन मिल रहा है।

अमरावती : जिले की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की बैठक ११ जनवरी को हुई। जिला परिषद् के अध्यक्ष ने ग्रामदान-कार्य को अपनाया है। सब संस्थाओं की ओर से सभी ९ कार्यकर्ताओं द्वारा अखण्ड सामूहिक पदयात्रा करने का निर्णय किया गया है। करजगाँव के गांधी-केन्द्र ने जरूड़ प्रखण्ड के ११२ गाँवों का ग्रामदान कराने की जिम्मेवारी ली। २७-२८ जनवरी को शिविर के बाद पदयात्राएँ होंगी। भातकुली प्रखण्ड की पदयात्रा में १० ग्रामदान हुए। कस्तूरबा-स्मारक निधि के कार्यकर्ताओं ने मेलघाट तहसील के दो प्रखण्डों की जिम्मेवारी निभायी। प्राप्त ग्रामदानों को रजिस्टर्ड कराने की कोशिश जारी है। गुरुदेव सेवा-मण्डल के कार्यकर्ताओं का सहयोग कृषिनिष्ठ साहित्यिक श्री बाबा मोहोड द्वारा प्राप्त होगा।

बुलढाणा : जलगाँव तहसील के संग्रामपुर प्रखण्ड में पदयात्रा होगी। 'साम्ययोग' पत्रिका द्वारा विचार-प्रचार हो रहा है। विकास खण्ड-अधिकारी, पटवारी, शिक्षक, पंच आदि कार्यकर्ताओं से समयदान का आश्वासन मिला है।

वर्धा : सेवाग्राम में हाल ही में २५० रचनात्मक कार्यकर्ताओं का शिविर संपन्न हुआ। इसी समय पवनार में मैत्री-सम्मेलन और गोपुरी में निसर्गोपचार-चिकित्सकों की परिषद् हुई। १६ जनवरी को खादी-ग्रामोद्योगी वस्तुओं से सुसज्जित 'मगन-संग्रहालय' का उद्घाटन अण्णासाहब सहस्रबुद्धे की अध्यक्षता में केन्द्रीय खाद्यमंत्री जगजीवन राम के द्वारा हुआ।

वर्धा जिले के कार्यकर्ताओं का पूरा समय जिले के प्रचार-कार्य में लग रहा है।

अहमदनगर : इस जिले के हरेक गाँव में गांधी-विचार-साहित्य पहुँचाने की कोशिश जारी है। २१ जनवरी को पदयात्रा का समाप्ति-समारोह हुआ।

धुलिया : वोराड़ी में दसवाँ अ० भा० आदिवासी-सम्मेलन हुआ। अक्राणी और अक्कलकुवा क्षेत्र के ग्रामदानी गाँवों में चल रहे ग्राम-स्वराज्य का कार्य देखकर सबको समाधान हो रहा है।

सातारा : पदयात्रा में २० ग्रामदान हुए। २ मार्च को जयप्रकाशजी का दौरा सातारा जिले में होगा। २५ हजार रुपये की थैली उनको समर्पित की जायगी। ('साम्ययोग' से)

कर्नाटक में ग्रामदान की प्रगति

श्री एच०आर० वेंकटरमण अय्यर कर्नाटक सर्वोदय-मण्डल के अध्यक्ष सर्वसम्मति से चुने गये और नयी कार्यकारिणी का गठन हुआ।

• धारवाड़, बेलगाँव, विजापुर और कोलार जिले में ६ ग्रामदान-शिविर सम्पन्न हुए। बिलगी और बंगारपेट तालुका में ग्रामदान-अभियान जोरों से चल रहा है।

• कर्नाटक सर्वोदय-मण्डल के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मल्लिकार्जुनप्पा गौडा ने २ अक्तूबर '६८ से मैसूर प्रदेश में पदयात्रा शुरू की है और अब तक ५०० मील की सात जिलों में पदयात्रा कर चुके हैं। इस तरह ग्रामदान और ग्रामस्वराज्य का सन्देश वे गाँव-गाँव पहुँचा रहे हैं। अभी उन्होंने कारवार जिले में प्रवेश किया है।

• सुश्री निर्मला देशपांडे के ग्रामदान-शिविरों में भाग लेने के कारण आन्दोलन में गति आयी है।

दिसम्बर '६८ तक मैसूर में ५७० ग्राम दान हुए।

—एच० आर० वेंकटरमण अय्यर
अध्यक्ष, कर्नाटक सर्वोदय-मण्डल

श्रद्धांजलि

बहुत थोड़ी अवधि में ही देश के तीन महान व्यक्ति दिवंगत हो गये! गांधी-विचार के एकनिष्ठ बुजुर्ग श्री मगन भाई देसाई का १ फरवरी को, तमिलनाड़ के जनप्रिय नेता और सफल मुख्य मंत्री श्री सी० एन० अन्नादुरै का ३ फरवरी '६९ को, तथा राजस्थान के वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ श्री माणिक्यलाल वर्मा का २४ जनवरी '६९ को देहावसान हो गया। जिनके जीवन का हर पल देश की जनता और पूरी मानवता के हितचिंतन में लगता रहा हो, ऐसे इन महान आत्माओं को हमारी विनम्र श्रद्धांजलि!

सर्वोदय-पखवारे में पाँच जिलादान

तमिलनाडु का लगभग एक-तिहाई भाग ग्रामदान में शामिल

अब बिहार में सिर्फ ९ और तमिलनाडु में सिर्फ ८ जिलों का काम बाकी

प्रदेशों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ३० जनवरी '६९ से १२ फरवरी '६९ तक ग्रामदान-आन्दोलन ने कई महत्त्वपूर्ण मंजिलें तय की हैं। देश भर में अधिकाधिक ग्रामदान प्राप्त करने के लिए चल रहे अभियानों में बराबर नये ग्रामदान प्राप्त होते जा रहे हैं। सब जगहों का अनुभव आमतौर पर यही है कि गाँव-गाँव में विचार पहुँचानेवाले जितनी जल्दी पहुँचेंगे, भारतदान का लक्ष्य उतना ही जल्द पूरा होगा। इस संदर्भ में इस सर्वोदय-पखवारे में हुई प्रगति अत्यन्त उत्साहवर्धक और प्रेरक है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि 'तूफान' की शब्द-शक्ति पूरे देश में काम कर रही है।

तमिलनाडु में ३ जिलादान

तिरुनेलवेली का जिलादान बहुत पहले ही हो चुका था। रामनाड जिलादान की

घोषणा ९ फरवरी '६९ को तथा त्रिचनापल्ली और मदुराई की १२ फरवरी '६९ को हो जाने की शत-प्रतिशत आशा है।

तमिलनाडु सर्वोदय मण्डल ने प्राप्तदान के लिए ५०० प्रशिक्षित ग्रामीण युवकों का जत्था तैयार किया है, जिनकी शक्ति निरन्तर तमिलनाडुदान के लक्ष्य को पूरा करने में लगी है। मदुराई और त्रिची नगरों में घर-

घर जाकर सम्पर्क करने का भी सघन कार्यक्रम चल रहा है, ताकि वे लोग १२ फरवरी के सर्वोदय-मेले में शरीक हों।

जिलादान के अगले अभियान अब उत्तरी जिलों में चलाये जायँगे।

बिहार में मुंगेर जिलादान

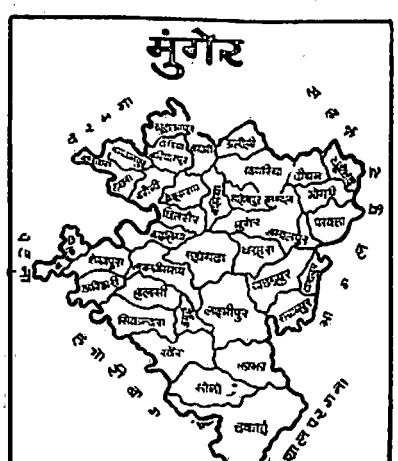

३० जनवरी '६९ को ही जिलादान पूर्ण हो गया। १२ फरवरी '६९ को मुंगेर नगर में विशाल पैमाने पर जिलादान-समारोह मनाया जायगा। जिलादान की भेंट स्वीकार करने के लिए भागलपुर जाते हुए विनोबाजी इस समारोह में उपस्थित होंगे। यह बिहार का आठवाँ जिला है। नौवाँ जिला धनबाद का काम भी लगभग पूरा हो गया है। सम्भव है कि उसकी भी घोषणा १२ फरवरी '६९ को ही हो जाय।

मध्य प्रदेश का दूसरा जिलादान

प० निमाड़

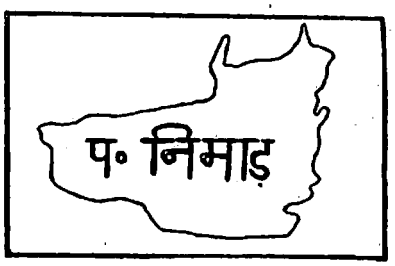

टीकमगढ़ के बाद मध्य प्रदेश की शक्ति प० निमाड़ का काम पूरा करने में लगी थी। जिले में कुल १७१२ गाँव हैं। गांधी-स्मारक निधि के २० कार्यकर्ता २१ दिसम्बर '६८ से ही वहाँ जिलादान का काम पूरा करने में जुट गये थे। इनके अलावा मध्य प्रदेश सर्वोदय मण्डल के प्रमुख कार्यकर्ताओं, ग्राम-प्रधानों तथा सरकारी कर्मचारियों की भी शक्ति जिलादान का काम पूरा करने में सहायक रही।

पठनीय मननीय

नयी तालीम

शैक्षिक क्रांति की अग्रदूत मासिकी

वार्षिक मूल्य : ६ रु०

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी-१

वार्षिक चन्दा : १० रु०; विदेश में २० रु०; या १५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।

www.vinoba.in

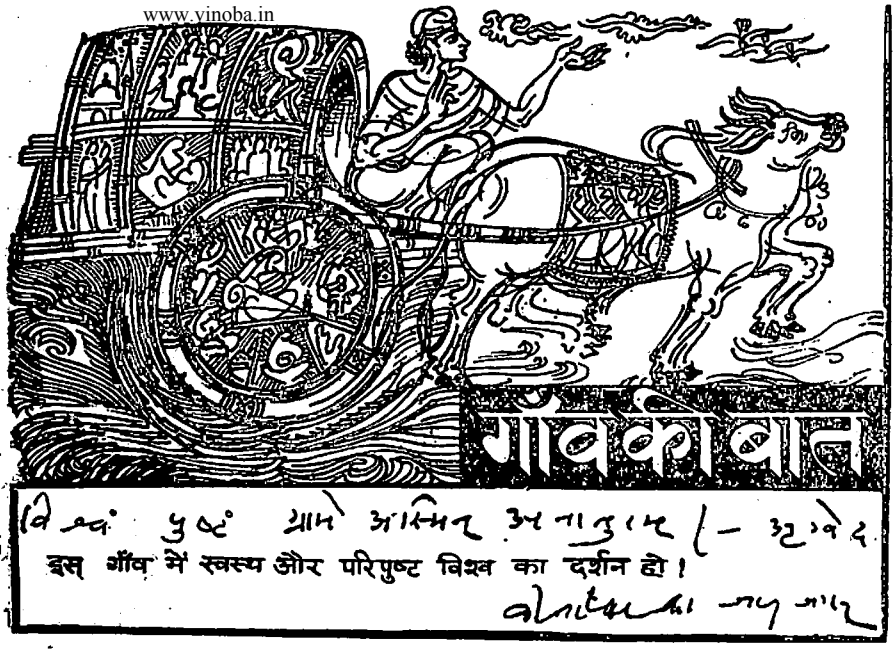

इस अंक में

कस्तूरबा
सफाई : ज्ञान का पहला पाठ
विकास की प्रगति धीमी क्यों ?
"हाँ, हम ग्रामदानी हैं !"
"खाना नहीं दोगे, तो चोरी करूँगी"
दलहनी फसल को कीड़ों से बचाने के उपाय
कुछ संस्मरण

१० फरवरी, '६९
वर्ष ३, अंक १२] [१८ पैसे

कस्तूरबा

सौराष्ट्र के पोरबन्दर नगर में जहाँ पूज्य बापूजी का जन्म हुआ था, उसी मोहल्ले में कोई तीन-चार सौ कदम की दूरी पर कस्तूरबा का जन्म हुआ था।

बा के माता-पिता, भाई आदि के सम्बन्ध में मैंने बहुत कम सुना है। उनके दो भाई थे। एक तो अधिक जी नहीं पाये, दूसरे, जिन्हें हम लोग मामा कहा करते थे, बंबई में एक घने मोहल्ले में छोटे-से कमरे में रहते थे और कुछ व्यापार करते थे।

कस्तूरबा के साथ बापू की सगाई सन् १८७६ में हुई तथा विवाह सन् १८८३ में हुआ। सगाई के समय उनकी आयु सात वर्ष की और विवाह के समय चौदह वर्ष की थी। इस हिसाब से बा का जन्म सन् १८६९ अप्रैल के आसपास पड़ता है।

अपनी दादी से मैंने सुना है कि बा में छुटपन से ही परिश्रम करने की बड़ी उमंग थी। कस्तूरबा, बापूजी बेरिस्टर बनकर इंग्लैण्ड से लौटे तब तक, ससुराल में बड़ों की सेवा में लगी रहीं।

बा बापूजी की अनुचरी या परछाई मात्र नहीं थीं, न असहाय अबला ही थीं, बल्कि समझबूझकर इच्छापूर्वक चलनेवाली जीवनसंगिनी थीं।

अफ्रीका के जीवन की झाँकी

अफ्रीका में बा ने अपनी सीधी-सादी साड़ी के अतिरिक्त कुछ भी नया नहीं अपनाया था। पैरों में जूते, मोजे और साड़ी पर फूलदार बेलबूटों की पतली-सी किनारी इतना ही विशेष वस्त्र वे नगर में जाते समय धारण करती थीं। यह भी याद आता है कि घर में जो एक-दो चूड़ी आदि वे पहनती थीं, उनके अलावा कोई भी आभूषण पहनते-उतारते मैंने बा को नहीं देखा।

बा के जीवन में पहली कसौटी तब आयी, जब बापूजी ने अंग्रेजों, ईसाइयों और अन्य व्यक्तियों को अपने ही बंगले में बसाना शुरू किया। यहाँ के रिवाज के अनुसार अतिथि के लिए मल-मूत्र का पात्र भी खाट के पास रात में रखा जाता था। सबेरे इसकी सफाई अपने हाथों बा-बापू को करनी होती थी। वैष्णवधर्मी महिला के लिए विधर्मी के मल-मूत्र की सफाई का काम अत्यन्त कठिन कार्य था। परन्तु बा की बुद्धि ने इसे ग्रहण कर लिया।

दूसरी भारी कसौटी बा की तब हुई, जब बापूजी को प्रथम कारावास हुआ। उस समय बा ने जेल से बाहर रहते हुए वही भोजन लिया, जो जेल में नीचे-से-नीचे स्तर के कैदी को वहाँ उपलब्ध था— सूखी डबल रोटी और मक्का का दलिया। दूध का दर्शन नहीं। इस सबके कारण

माता कस्तूरबा

www.Vinoba.in

बा सख्त बीमार हो गयीं व मौत के किनारे पहुँच गयीं। बापूजी ने जेल में से इस मतलब का पत्र भेजा, "जुर्माना देकर मैं तुम्हारी सेवा में नहीं आ सकता। देश के लिए कारावास भुगतना धर्म है। मैं तुम्हारे पास पहुँच न पाऊँ और तुम्हारी मृत्यु हो गयी तो मैं तुम्हें जगदम्बा मानूंगा और पूजूंगा।"

बा स्वयं पढ़ी-लिखी नहीं थीं, जो अपनी डायरी लिख सकतीं, तथा जहाँ तक मुझे पता है, अपने कष्ट की, अपनी आन्तरिक चिन्ताओं की कहानी औरों से कहने की भी उनकी आदत नहीं थी। जब वह बातचीत करतीं तो औरों के कष्ट पूछतीं, औरों की चिन्ता में शरीक होतीं।

दक्षिण अफ्रीका में सन् १९१३ में जब बापूजी ने जनरल स्मट्स की सरकार के सामने तीसरा और अन्तिम सत्याग्रह-युद्ध छेड़ा, तब बा घर और फीनिक्स संस्था के घरौंदे से बाहर निकलकर दक्षिण अफ्रीका के लाखों भारतीयों की पूजनीया बन गयीं।

पूज्य बा सर्वप्रथम जेल गयीं और जेल की तकलीफ को आत्मबल से सहन किया। जब कारावास से रिहा होकर बा बाहर आयीं तब बा को देखकर मन कबूल करने को तैयार नहीं हो रहा था कि यह बा ही हैं! उनकी भरी हुई देह सूखकर काँटा हो गयी थी। मुँह की हड्डियाँ उभर आयी थीं।

फीनिक्स पहुँचते ही बा का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। महीनों वह रोग-शय्या पर पड़ी रहीं। बापूजी ने भी उस समय जो सेवा-शुश्रूषा की, उसका दूसरा उदाहरण लाखों-करोड़ों के दाम्पत्य जीवन से ढूंढ़ निकालना कठिन ही होगा।

अफ्रीका से वापस आने पर अहमदाबाद में बापू आश्रम खोलकर रहने लगे। एक अछूत परिवार दूदा भाई और दानी-बहन को अपने आश्रम में स्थान दिया।

उन्होंने बा को सुना दिया, "दूदा भाई, दानी बहन यहाँ रहेंगे, आश्रम में हमारे रसोई-घर में साथ-साथ रसोई बनाने में हाथ बँटायेंगे और पंगत में ही भोजन करेंगे। तुमसे यह बर्दाश्त न हो, तो अलग कहीं रह सकती हो। तुम्हारे लिए मैं अलग आश्रम खोलने का प्रबन्ध कर दूँगा। कन्या और महिलाओं का पृथक् आश्रम तुम चलाओ। उसमें चाहो तो अस्पृश्यों को मत लेना। इस सत्याग्रह आश्रम में ऊँच-नीच एक समान रहेंगे।"

बा के लिए तो यह 'भई गति साँप-छछुन्दर केरी।' बापूजी से अलग कहीं जाकर रहने की कल्पना से ही उनके प्राण सूख जाते थे! क्षणभर भी उनसे पृथक् होना बा के लिए असहनीय था। जैसा कि सीता ने राम से कहा था कि सूर्य और सूर्य की प्रभा दोनों अलग नहीं हो सकते, वैसे ही बा ने भी अपने मन से कहा—मनुष्य होकर जो मनुष्य को अपमानित करे और अस्पृश्य समझे यह अधर्म ही है, धर्म नहीं है। और बापूजी का यह सिद्धान्त बा ने भी अपना लिया और वैसा ही आचरण करने को तैयार हो गयीं।

खादी आरंभ करने से पूर्व बा रंगीन शोभामय साड़ी पहनती थीं। बुढ़ापे में भी खादी की अपनी शुभ्र साड़ी की चमकती लाल किनार उन्हें प्रिय थी और वह पहनती थीं। पूज्य बापूजी ने बहुत चाहा कि सत्याग्रह आश्रम में बहनें और कन्याएँ केशकलाप सँवारने की परिपाटी हटा दें, ताकि स्त्री-पुरुषों के सामूहिक जीवन और सहकार्य बढ़ने के साथ-साथ ब्रह्मचर्य की साधना की बाधा दूर हो। मीरा बहन जैसी बापू को विदेशी शिष्या ने बापू के इस विचार का जोरदार समर्थन किया और उस पर स्वयं आचरण भी किया। किन्तु बा ने इस विचार का रंचभर स्वागत नहीं किया। मजबूत किला बनाकर आश्रम की सब बहनों के रक्षण में बापूजी के सामने अडिग बनी रहीं। बापूजी के उपदेश, व्यंग्य-विनोद, दलीलों आदि की वर्षा चट्टान की तरह झेलती रहीं और केश-विन्यास तथा संपूर्ण साड़ी की वेशभूषा में तनिक भी अन्तर बा ने स्वीकार नहीं किया।

सामान्य दादी-नानी के समान ही अपने पौत्र, पौत्री, दामाद, धेवते आदि के लिए उनके मन का खिंचाव बना रहा। अहमदाबाद के आश्रम से चलकर सुदूर कलकत्ता तक अपने बड़े पुत्र हरिलाल गांधी के घर जच्चा-बच्चा का काम करने के लिए प्रायः तीन महीने के लिए वे तब रहीं, जब बापूजी चंपारण में अंग्रेज नीलहों और अंग्रेज सरकार से कठिन मोरचा ले रहे थे तथा जेल जाने को उद्यत थे। बाद में जब हरिलाल गांधी की पत्नी का देहान्त सन् १९१९ की फ्लू की महामारी के कारण हो गया, तब उन्होंने उनके तीन छोटे-छोटे शिशुओं को अपने पास रखकर पाल-पोसकर बड़ा किया। साथ ही, सैकड़ों आश्रमवासियों का एवं बापूजी के पास आनेवाले अतिथियों का सौभाग्य रहा कि घर के बच्चों पर बा का जो स्नेह था, उस अमृत-स्नेह का लाभ, उनके पास जो पहुँचा उसने पाया।

चंपारण में नीलवरों के महासंकट से और पाशवीय आतंक से किसानों की रक्षा में जब बापूजी सफल हो गये, तब उनकी दीन-हीन दशा सुधारने के लिए खोली गयी सर्वप्रथम ग्राम-पाठशाला का संचालन बापूजी ने बा के हाथ में सौंपा। नहाकर बदलने के लिए दूसरी फटी साड़ी का भी अभाव जिन बहनों में था, उनके बीच ले जाकर बापू ने बा को बैठा दिया। गरीब भारत के लिए क्या क्या करना आवश्यक है, इसका प्रत्यक्ष अनुभव बा ने वहाँ पाया।

बा-बापू के जीवन का अब उत्तरार्ध प्रारम्भ हो चुका था। बापूजी की पचासवीं जन्मगाँठ मनायी जा चुकी थी। गार्हस्थ्य के बाद वानप्रस्थ और उसके बाद संन्यास-धर्म बताया गया है। बा-बापू ने तीसरे और चौथे आश्रमों की दीक्षा विधिवत् नहीं ली। परन्तु उनके जीवन में तो भरी जवानी में ही संयम, नियम, त्याग, सेवा और धर्म-साधना का कार्यक्रम आरम्भ हो गया था। उनका गार्हस्थ्य-धर्म ही संन्यास-धर्म तक ऊँचा उठ गया था।

चौबीस-पच्चीस वर्ष के इस लगातार चलनेवाले युद्ध के सेनापति बापूजी रहे और इस अनोखे सेनापति की अर्धांगिनी के रूप में पूज्य बापू का कस्तूरबा ने जो साथ दिया है वैसे और उदाहरण विश्व के इतिहास में इने-गिने ही मिलेंगे। बापू के सेनापतित्व की इस लम्बी अवधि में बा के कदम भी उनके साथ-ही-साथ आगे-ही-आगे रहे।

बयालीस के आन्दोलन के समय सरकार ने जो हृदयहीन अत्याचार किये, इससे कस्तूरबा का हृदय बहुत दुःखी हो गया था। बिना मुकदमा चलाये हजारों युवक-युवतियों को जेल में बन्द कर देने के अन्याय से बा के चित्त को बड़ा कष्ट हो रहा था। उनका कहना था कि—"अंग्रेज-सरकार को जितना भी कष्ट देना है, हमें दे ले। बापू को और मुझको जितना जी चाहे जेल में बन्द रख ले और हमें कष्ट पहुँचाने की अपनी इच्छा पूरी कर ले, पर अन्य सभी देशवासियों को जेल से मुक्त करने की बात सरकार मान जाय तो कितना अच्छा हो!"

लिखना-पढ़ना, भाषण देना उन्हें नहीं आता था। उन दिनों कहीं भाषण देने जाना हो तो कभी-कभी वह मुझे बुलाकर कहतीं, "प्रभु, कागज-कलम लेकर बैठ जा मेरे पास, वहाँ क्या बोलूँगी वह थोड़ा लिखवा दूँ।" जब मैं लिखने बैठता, तब मेरी कलम पीछे ही रह जाती और एक-से-एक प्रबल विचार बिना रुके बा के मुख से निकलते रहते थे। मैं दंग रह जाता था कि बापूजी के 'नवजीवन' के बड़े-बड़े लेखों के मर्म को किस खूबी से थोड़े वाक्यों में बा प्रकट कर रही हैं।

बापूजी के कारावास के कारण बा का नित्य का भोजन फिर से आधा और सूखा रह गया था। उनकी काया लट गयी थी, परन्तु गुजरात भर में एक कोने से दूसरे कोने में उनकी यात्रा चलती रही। जहाँ जातीं वहीं प्राण फूँकतीं, नयी चेतना जाग्रत कर देती थीं। छुआछूत मिटाने, खादी और स्वदेशी अपनाने, हिन्दू-मुस्लिम भाईचारा बनाये रखने और अंग्रेजों की गुलामी फेंक देने के पाठ बड़ी-बड़ी सभाओं में बिलकुल मौलिक और सरल भाषा में हर जगह सुनाती थीं।

अब वे गृहिणी न रहकर राष्ट्रमाता बन चली थीं। पता नहीं था कि बापूजी छः वर्ष बाद छूटकर आ पायें या वहीं उनके जीवन का अन्त होगा। पिता के होने पर किस प्रकार माता घर के बालकों का सारा उत्तरदायित्व अपने कंधों पर महसूस करती है, वही स्थिति तब बा की थी। उनके मन में था कि बापू का जेल में बन्द होना कहीं असफल न हो जाय। स्वराज्य के लिए लड़ने की बात लोगों के दिलों से कहीं हट न जाय, लोग सुस्त न पड़ जायँ।

सन् १९२१ के आन्दोलन से लेकर सन् १९४२ वाले आंदोलन तक स्वराज्य-संग्राम में कई उतार-चढ़ाव आये। परन्तु प्रत्येक बार बापूजी के आगे बढ़ने के साथ-साथ बा भी पूरे धैर्य, त्याग, तपस्यापूर्वक लगी रहीं।

स्वयं बा ही नहीं, उनके माध्यम से भारतवर्ष की विराट् नारी-शक्ति जाग उठी और सुसंगठित होकर सक्रिय बन गयी।

—प्रभुदास गांधी

सफाई : ज्ञान का पहला पाठ

गांधीजी चम्पारण में घूम रहे थे। एक दिन उन्होंने कस्तूरबा से कहा : "तुम क्यों स्कूल नहीं शुरू करती? किसानों के बच्चों के पास जाओ, उन्हें पढ़ाओ।" कस्तूरबा बोली : "मैं क्या सिखाऊँ? अभी तो मुझे बिहार की हिन्दी आती भी तो नहीं।"

"बात यह नहीं है। बच्चों का प्राथमिक शिक्षण तो सफाई का है। किसानों के बच्चों को इकट्ठा करो, उसके दाँत देखो, आँखें देखो, उन्हें नहलाओ। इस तरह उन्हें सफाई का पहला पाठ तो सिखा सकोगी। माँ के लिए यह सब करना कठिन थोड़े ही है। यह सब करते-करते उनके साथ बातचीत करोगी, तो वे भी तुमसे बोलेंगे। उनकी भाषा तुम्हारी समझ में आने लगेगी और आगे जाकर तुम उन्हें ज्ञान भी दे सकोगी। लेकिन सफाई का पाठ तो कल से ही उन्हें देना शुरू करो।"

कस्तूरबा अगले दिन से वहीं रहने लगीं, बाल-गोपालों की सेवा का असीम आनन्द लूटने लगीं।

गांधीजी सफाई को ज्ञान का आरम्भ मानते थे।

× × × ×

बापूजी सफाई के परम भक्त थे। सफाई परमेश्वर का रूप है। हमारे देश को अभी यह सीखना बाकी है कि सफाई ईश्वर है। घर में तो हम सफाई रखते हैं, लेकिन सार्वजनिक सफाई का हमें अभी ज्ञान नहीं है। —साने गुरुजी

www.vinoba.in

विकास की प्रगति धीमी क्यों ?

प्रश्न : भारत देश में सत्य, अहिंसा का विकास महर्षियों द्वारा हुआ। गांधीजी और आप उसमें विकास करते रहे हैं। परन्तु आज देश की स्थिति विपरीत है। हिंसा में विश्वास रखनेवाले समुदाय जेलों में रहते हुए भी चुनावों में विजयी हो रहे हैं। राजा-महाराजाओं का प्रभाव बढ़ रहा है। विधान-परिषद् व लोकसभाओं में असभ्य व्यवहार हो रहा है। हमारी ग्रामदानी कल्पना में, जैसा कि भारत को बनाना चाहते हैं, प्रगति धीमी है। कैसे होगा ? मन में घबड़ाहट है कि कहीं भारतीय संस्कृति नष्ट न हो जाय।

विनोबा : यह जो कह रहे हैं कि इस वक्त हिंसा की शक्तियां काफी जोर कर रही हैं। इसे कबूल करना चाहिए। लेकिन अहिंसा के लिए वह कोई बड़ी समस्या नहीं। होता क्या है ? एक सफेद खादी पहना हुआ मनुष्य है और उसके कपड़े पर थोड़ा-सा दाग लग गया स्याही का या और किसी चीज का, तो उधर एकदम ध्यान जाता है। और अगर काला ही वस्त्र हो और दो-चार दाग पड़ जायँ तो भी दीखता नहीं। सफेद पर दाग बहुत जल्दी दीख पड़ता है। मानव-स्वभाव में अहिंसा भरी है। इसलिए जरा भी विरोधी चीज होगी तो मनुष्य को एकदम मालूम होगा। थोड़ी होगी तो भी ज्यादा मालूम होगा। एकदम उसका अखबार में प्रकाशन होगा।

मान लीजिए, यहाँ रामानुजगंज में एक माँ है और वह अपने बच्चे पर प्यार करती है, तो उसका टेलीग्राम अखबार को कोई भेजेगा नहीं, क्योंकि सभी माताएँ अपने बच्चों पर प्रेम करती हैं। मानव-स्वभाव में यह चीज पड़ी है, लेकिन उसके विरोधी बात हुई, कत्ल हुई तो तुरन्त उसका टेलीग्राम अखबारों को भेजा जायेगा, क्योंकि मानव-स्वभाव के विरोधी बात हुई। बच्चे पर प्यार करना मानव-स्वभाव के अनुकूल है। लाखों माताएँ प्यार करती हैं, माँ बच्चे पर प्यार करती है, भाई भाई पर, बहन पर, प्यार करता है, गरीबों के लिए दान देता है, ऐसा सतत चल आ रहा है। इसलिए इन बातों का टेलीग्राम नहीं जाता। अच्छाई मानव-स्वभाव में भरी है। उसका कोई प्रकाशन नहीं करता। लेकिन विरोधी बात हुई तो एकदम बौखलाहट होती है। रामानुजगंज में एक कत्ल हुई, बाकी सबका परस्पर-प्रेम का व्यवहार चल रहा है। केवल एक कत्ल हुई है तो भी वह बहुत ज्यादा क्षोभ पैदा करेगी। इसलिए हिंसा का बोलबाला दीखता है, फिर भी अहिंसा का बोलबाला है। और इसलिए बाबा का कार्य महत्त्व का है।

कार्य को देर लग रही है, क्योंकि हम अच्छे काम में लगे हैं। अच्छा काम एकदम दीख नहीं पड़ता। इस वास्ते हम खादीवालों को यह समझाते हैं—समझाते आठ साल निकल गये—कि भाई ग्रामदान के आधार पर आपकी खादी टिकेगी। अब उन लोगों की समझ में यह बात आयी और अब बिहार, उत्तर प्रदेश, तमिलनाड, इन प्रान्तों के खादीवालों ने ग्रामदान के कार्य को उठाया है। यही पाँच-छह साल पहले हो सकता था, लेकिन उनकी समझ में बात जल्दी आयी नहीं। ये खादी में फँसे हुए थे। फिर जहाँ-जहाँ अकाल पड़ता था, वहाँ खादी को ले जायेंगे, ऐसा उनका खयाल था। फिर उनके ध्यान में आया कि यह बात नहीं हो सकती। फिर इन लोगों ने क्या किया ? अकाल में चरखा देकर खादी शुरू की, उसका कच्चा सूत आया। तो भारत सरकार के पास प्रार्थना की कि कच्चे सूत को सरकार खरीद ले, क्योंकि अकाल में राहत का काम उन्होंने किया है। तब मुरारजी भाई ने उनको सुनाया कि आपको यह धंधा दिया किसने ? अकाल का निवारण करना तो सरकार का काम है। वह हमारी जिम्मेदारी है, आप क्यों उठा रहे हैं ? जब उन्होंने यह कहा, तब इनके ध्यान में बात आयी। तो खादीवालों की आँखें अभी उघड़ी हैं। इसलिए इस काम को देरी हो रही है और प्रगति धीमी गति से हो रही है। अगर सब लोग समझ जायँ और इस काम को उठा लें तो देर लगेगी नहीं।

[गाँव के प्रमुख लोगों के साथ की चर्चा से, रामानुजगंज, २१-११-'६८]

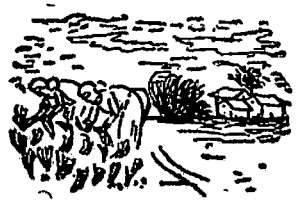

www.vinoba.in

"हाँ, हम ग्रामदानी हैं !"

सराईदलनी-वैष्णपुर गाँव मैत्री आश्रम, नार्थ लखीमपुर से तीस मील पश्चिम में है, जहाँ भाई विश्व सइकिया अपनी गाड़ी में मुझे लिवा आये। १२ जनवरी '६९ की सुनहली सुबह थी। सर्वोदय-कार्यकर्ता निरन् बरा उसी गाँव के निवासी हैं। मिडिल स्कूल के हेडमास्टर श्री मदन भुइयाँ ग्रामसभा के मंत्री (सेक्रेटरी) हैं, जो मेरे साथ हो लिये। इस कुलीन उच्च जातीय भाई की पत्नी आदिवासी है, जिसकी सफाई और स्नेह अतिथि का मन मोह लेता है। आप यहाँ कोई छुआछूत नहीं देख पायेंगे।

सन् १९५७ में यह गाँव पूरा ग्रामदान नहीं हो सका, जो कि सन् '६२ में हुआ। ग्रामदान होने के बाद सन् '६२ में ही पूज्य विनोबाजी यहाँ आकर ठहरे। राज्य के 'ग्रामदान-ऐक्ट' के अनुसार सन् '६३ में यह गाँव विधिवत् घोषित हुआ। पश्चिम लखीमपुर में यह पहला ग्रामदान था। प्रारंभिक उत्साह के वेग में, गाँव के सभी उन्नीस परिवारों ने सामूहिक खेती शुरू की, किन्तु वह प्रयोग पूर्ण सफल नहीं हुआ। व्यक्तिगत जिम्मेवारी और स्वार्थ की प्रेरणा नहीं होने से, खेत की जुताई बुआई समय पर नहीं की जा सकी, इसलिए सामूहिक खेती का प्रयोग छोड़ना पड़ा।

दूसरा प्रयोग हुआ भूमि के समान वितरण का, किन्तु प्रत्येक परिवार की आवश्यकताएँ कम-ज्यादा होने के कारण, यह अधिक दिन नहीं चला। इसके बाद 'बीघा में कट्ठा' निकाला गया, जो आज का स्वरूप है। प्रत्येक व्यक्ति के पास जितने बीघा जमीन थी उतने कट्ठा निकालकर उसने दी, इस तरह कुल आठ बीघा इकट्ठा हुई, जो जमीन गाँव के चारों भूमिहीन परिवारों में बाँट दी गयी। इसके अलावा आठ बीघा भूमि सामूहिक खेती के लिए रखी गयी है, जहाँ सब लोग श्रमदान करते हैं। कम जमीनवालों से कट्ठा नहीं लिया गया। यह गाँववालों ने मिलकर तय किया। प्रत्येक व्यक्ति प्रति बीघा आठ सेर धान ग्रामकोष के लिए दान देता है।

ग्रामकोष के दस हजार रुपये से गाँव का 'नामघर' निर्मित किया गया, जहाँ सामूहिक कीर्तन और सभा आदि होती है। प्रायः हर दो-तीन दिन बाद 'नामघर' में सब साथ बैठकर भगवान का नाम गाते हैं और गाँव के प्रश्नों पर विचार-विनिमय करते हैं। निर्णय सर्वसम्मति से लिये जाते हैं, बहुमत से नहीं। पुस्तकालय में दैनिक असमिया अखबार, गौहाटी से असमिया 'भूदान-यज्ञ', वाराणसी से हिन्दी 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक आदि पत्र नियमित आते हैं।

परम्परागत एण्डी का रेशम-उद्योग घर-घर में है। कुछ लोग कपास भी उगाते हैं। प्रत्येक घर में चरखा और कपड़े की बुनाई के लिए करघा है। यह आसाम की अपनी विशेषता है। 'सर्वोदय-पात्र' में प्रत्येक घर में प्रतिदिन एक मुट्ठी चावल डाला जाता है। इसका एक हिस्सा असम सर्वोदय-मण्डल को भेजा जाता है और शेष गाँव में जमा होता है। बालवाड़ी चलाने के लिए एक ग्रामसेविका को ग्रामसभा वेतन देती है। गाँव में पाँच 'शान्ति-सैनिक' हैं, जिनमें दो बहनें हैं। शराबखोरी बिलकुल नहीं है। कोई चोरी-छिपे शराब पी ले, तो मालूम होने पर, उसके सिर के बालों का मुण्डन करा दिया जाता है, ग्रामसभा की ओर से यह अहिंसक दण्ड मिलता है! कोर्ट-कचहरी या पुलिस के पास कोई नहीं जाता। गाँव की अपनी समाधान-समिति है, जो कोई विवाद उत्पन्न होने पर दोनों पक्षों को परस्पर-समाधान करने में सहायता करती है। अभी पड़ोसी गाँव के एक आदमी से जमीन को लेकर ग्रामसभा का झगड़ा है। आपस में उस झगड़े के फैसले के लिए बहुत प्रयत्न हुए, परन्तु निबटारा न हो सका। आखिर में कचहरी की शरण लेनी पड़ी है। इस बात से गाँव के लोगों को तकलीफ है, लेकिन क्या करते, उनके पास कोई उपाय नहीं रह गया था।

डिबरुअल गाँव

आइए चलें, दूसरे गाँव में। डिबरुअल गाँव बगल ही में है। सन् '६५ में यह ग्रामदान हुआ, एवं विधिवत् घोषित हुआ। कुल बीस परिवार, जमीन लगभग दो सौ बीघा। बारह बीघे में सामूहिक खेती होती है। यह जमीन पहले बंधक रखी हुई थी, जिसे ग्रामसभा ने 'वार-आन-वांट' की आर्थिक सहायता से छुड़ा लिया। ग्रामसभा की ओर से गाँव में एक सहकारी दूकान अच्छी तरह चल रही है। एक प्राइमरी स्कूल है। घर-घर में 'सर्वोदय-पात्र' है। भूमिहीन एक भी नहीं। कोर्ट-कचहरी में एक भी मामला-मुकदमा नहीं। सारा गाँव एक ही 'अहोम्' जाति का है। पहले यह पिछड़ी जाति मानी जाती थी, लेकिन अब इनमें से ही ग्रामसभा के अध्यक्ष के भाई डी० गगोई स्कूल-इंस्पेक्टर है, जो आपको गाँव घुमा लायेंगे। इनकी शिक्षिका पत्नी आपका स्वागत करेंगी। चावल की शराब, जिसे अपोंग या लाओपानी कहते हैं, पहले यहाँ बहुत प्रचलित थी। यहाँ तक कि सड़क पर लोगों का गुजरना मुश्किल था, इतना खतरनाक गाँव माना जाता था। लेकिन अब? ग्रामदान होने के बाद मानो कायापलट हो गया हो। डिबरुअल के लोग जब दूसरे गाँवों में जाते हैं तो गर्व से कहते हैं, "हाँ, हम ग्रामदानी हैं!"

—जगदीश थवानी

१० फरवरी, '६९

www.vinoba.in

"खाना नहीं दोगे, तो चोरी करूँगी"

धार जिले के बाकानेर विकास-खण्ड में ग्रामदान-प्राप्ति के लिए घूम रहा था। नदीकिनारे का कोई गाँव था। रात के आठ बजे सभा बुलायी थी। सभा में १०–१२ लोग आये। मैंने अपने साथियों से कहा, थोड़ी देर और लोगों का इन्तजार किया जाय, कुछ लोग और आ जायँ तो फिर अपनी बात शुरू करूं। एक किसान बोला : "साहब! जो कहना हो, जल्दी कहो— कोई हमारा खेत काट ले जायेगा।"

× × × ×

धार जिले की ही एक और बात याद आ रही है। ग्रामभारतीय-आश्रम, टवलाई में जिले का किसान-सम्मेलन आयोजित हुआ था। मुख्यमंत्री श्री गो० ना० सिंह से कुछ किसानों ने अपनी परेशानी कही : "हमारी फसलें सुरक्षित नहीं हैं। रात को चोर आते हैं, फसल काट ले जाते हैं। कुछ बड़े व्यापारी भूखे-नंगे लोगों को मजदूरी देते हैं और ट्रक के साथ चोरी करने भेजते हैं। अतः हमें बंदूकों की आवश्यकता है, जिससे हम अपनी फसलों की रक्षा कर सकें।"

× × × ×

अल्मोड़ा में मेरे गाँव का एक किस्सा है। मेरे गाँव में 'जोगिया भगत' नाम का एक हरिजन रहता है। उसे चार-पाँच बच्चे हैं। आधे दिन जंगल में लकड़ी काटता है और गाँव में बेचता है। आधे दिन भगवान के भजन गाता है और अनाज माँगकर अपने परिवार को पालता है। दो वर्ष पहले मैं गाँव गया तो, घरवालों ने बताया कि जोगिया किसी के खेत में धान काटते हुए पकड़ा गया और दो माह की सजा भुगतकर घर लौटा है। मैंने जोगिया से पूछा, तो उसने कहा। "हाँ बाबूजी, माँगने पर लोग देते नहीं हैं; जंगल में 'फोरिस गाड' (फॉरेस्टगार्ड) मारने आता है। मजबूर होकर चोरी करनी पड़ी।"

× × × ×

रायगढ़ जिले के एक गाँव में शिविरों में काम करनेवाले मेरे सहयोगी श्री द्वारिकाप्रसादजी तिवारी ग्रामदान के लिए गये हुये थे। एक जगह कुछ लोग इकट्ठा होकर एक औरत को पीट रहे थे। वह औरत जोर-जोर से रोती हुई कह रही थी : "मुझे रोटी दो, मैं दो दिन से भूखी हूँ।" पूछने पर लोगों ने बताया : "यह आधी पगली है, गाँव में भीख माँगती है, और लोगों का छोटा-मोटा काम कर देती है। दो दिन से इसे खाना नहीं मिला। गाँव के एक सम्पन्न घर से पीतल का एक बरतन चुराकर ले जा रही थी। बर्तन गिरा, आवाज आयी और पकड़ी गयी। बदमाश कहीं की! कितने हौसले बढ़ गये इन भुक्खड़ों के?"

× × × ×

मन को कचोट देनेवाली ये चार घटनाएँ मैंने आपके सामने रखी हैं। इन चारों किस्सों की बुनियाद में एक ही बात दिखाई पड़ती है—पेट भरने को अनाज नहीं मिला। यानी जीवन की बुनियादी आवश्यकता की कम-से-कम पूर्ति के लिए इन चारों दृश्यों के पात्रों ने चोरी की या वे चोरी की तरफ बढ़े हैं। बाकानेर-प्रखण्ड के उस किसान से जब मैंने पूछा : "भाई! तुम कहते हो, कोई खेत काट ले जायगा। आखिर यह कोई कौन है? और रात को क्यों अपनी जान जोखिम में डालकर ऐसा काम करता है?" तो वह बोला : "यही सा'बजी। भूखे-नंगे लोग, मजदूरी नहीं मिली, तो चोरी करने आते हैं।" किसान-सम्मेलन में आये किसानों के बीच बैठक में मैंने उनसे पूछा, "आप कहते हैं कि पूँजीवाले लोग ट्रकों में मजदूरों को चोरी करने भेजते हैं। आप शासन से बन्दूकें भी माँग रहे हैं! आपको एक बन्दूक मिल भी गयी तो क्या होगा? क्या यह सम्भव नहीं है कि पूँजीपति ट्रक के साथ पाँच-दस बन्दूकें भी रखेगा?" किसानों के पास कोई उत्तर नहीं था। दूसरी दो घटनाओं से भी यही बात सिद्ध होती है। 'जोगिया' को काम नहीं मिलता है, उसके बच्चों को खाना नहीं मिलता है। इसलिए चोरी का रास्ता अपनाता है। रायगढ़ की बहन भी यही कहती है : "मैं दो दिन से भूखी हूँ, मुझे काम नहीं दोगे, खाना नहीं दोगे, तो चोरी करूँगी।"

आप गहराई से सोचेंगे तो आपको लगेगा कि इन सवालों का जवाब ग्रामदान का विचार दे सकता है। ग्रामदान में गाँव-वाले बैठकर गाँव की योजना बनाते हैं; सबको काम, सबको धाम, सबको रोजी, सबको रोटी, सबको कपड़ा, सबको शिक्षा, सबको सुख, सबको सुविधा की बात ग्रामदान सोचती है। मतलब चोरी-चराई को गाँववाले ही रोक सकते हैं। यही ग्रामदान का विचार है। गरीब के बच्चे भूखों न मरें, इसलिए उसे साधन दिया जाय कि वह अपनी रोटी कमा सके। गाँव में प्रेम पैदा करने का नुस्खा है, ग्रामदान। इससे दिल जुड़ता है, प्रेम पैदा होता है, और गाँवों में सबकी व्यवस्था की योजना बनती है, फिर चोरी की कल्पना तक आदमी नहीं करता, बल्कि रक्षण की और एक-दूसरे को सम्हालने-संवारने की बात सोचता है।

—गोपालदत्त भट्ट

दलहनी फसल को कीड़ों से बचाने के उपाय

भारत में करीब ५ करोड़ ७० लाख एकड़ भूमि में दलहनी फसलें उगायी जाती हैं। इनका वार्षिक उत्पादन करीब एक करोड़ टन है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार में दलहनी फसलें अधिक उगायी जाती हैं। इन फसलों को नुकसान पहुँचानेवाले कीड़ों की संख्या सैकड़ों में हैं। इनमें से कुछ कीड़ों का, जिनसे दलहनी फसलों को अधिक हानि होती है, विवरण दिया जा रहा है।

चना

चने का तना कटुवा : चने पर इस कीड़े का भयंकर आक्रमण होता है। इसकी सूंडियां (केटरपिलर) रात में निकलकर चने के तने तथा शाखाओं को काटकर गिरा देती हैं। वयस्क सूंड़ियां भूमि के अन्दर प्यूपा बन जाती हैं। ५ प्रतिशत डी० डी० टी०, हैप्टाक्लोर, क्लोरडेन या एल्ड्रीन का १५ से २० पौंड प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करने से इस कीड़े से फसल की रक्षा हो सकती है। १० प्रतिशत बी० एच० सी० को मिट्टी में मिलाने से भी यह कीड़ा नष्ट हो जाता है।

चने का फली-छेदक : इस कीड़े की सूंडियां शुरू में मुलायम पत्तियों को खाती हैं। बाद में चने की फलियों में छेदक दाने को भी खा जाती हैं। वयस्क सूंडियां भूमि के अन्दर प्यूपा बनाती हैं। ०.२ प्रतिशत डी० डी० टी० या एल्ड्रिन को ८० गैलन पानी में घोलकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़कने से या ५ प्रतिशत बी० एच० सी० या डी० डी० टी० को १५ से २० पौंड प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करके फसल को बचाया जा सकता है।

चने का सेमीलूपर : ये कीड़े हरे रंग के होते हैं, जो पत्तियों को खाते हैं। एक मोटी रस्सी को मिट्टी के तेल में डुबोकर फिर पौधों में रगड़ने से कीड़ों को गिराकर नष्ट किया जा सकता है। जिन रसायनों से चने के फली-छेदक कीड़ों को मारा जाता है, उन्हीं रसायनों से इन्हें भी नष्ट किया जा सकता है।

गुझिया घुन : इस कीड़े का प्रकोप चने के पौधे पर बहुत अधिक होता है। १० प्रतिशत की शक्ति के बी० एच० सी० का छिड़काव या ५ प्रतिशत की शक्ति के एल्ड्रिन का छिड़काव फसल को इस कीड़े से बचाने में बड़ा उपयोगी साबित हुआ है।

मटर

तना काटनेवाला लैफिग्मा कीड़ा : इसकी मादा समूह में मटर की पत्तियों पर अंडे देती हैं। इसकी सूंडी पौधों को खाती है। जब पौधे छोटे होते हैं, तब यह कीड़ा मुलायम पौधों को भी काटकर गिरा देता है। १० प्रतिशत डी० डी० टी० का १५ पौंड प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करने से फसल को बचाया जा सकता है।

मटर का तना-छेदक : इस कीड़े की मादा तथा मैगट (बड़ा कीड़ा) दोनों पत्तियों तथा पौधों में छेद कर देते हैं, जिससे पत्तियां सूखकर गिर जाती हैं। ०.०२ प्रतिशत की शक्ति का एल्ड्रिन या ०.०३ प्रतिशत की शक्ति का डाइजिनान का छिड़काव करने से ये कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

मटर की पत्ती में घर (लीफ माइनर) बनानेवाले कीड़े : इन कीड़ों की सूंडियां पत्तियों की ऊपरी सतह में घर बनाकर रहती हैं तथा पत्ती को खाती हैं। प्यूपा भी घर के अन्दर ही बनता है तथा मादा भी पत्तों के ऊपरी सतह के नीचे अंडे देती है। अतः ऐसी पत्तियों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एक भाग निकोटिन सल्फेट और दो भाग साबुन को ४०० भाग पानी में घोलकर छिड़कने से पत्तियों के अन्दर की सूंडियां मर जाती हैं।

मटर का फली छेदक : हरे रंग के इस कीड़े की सूंडियां मटर की फलियों में छेदकर अन्दर के दानों को खा जाती हैं। १.२५ पौंड शुद्ध एल्ड्रिन का प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करने से फसल की कीड़ों से रक्षा की जा सकती है।

अरहर

प्लूम मौथ छेदक : इस कीड़े के पतंगे पतले होते हैं, जिनके पंख कई भागों में बंटे होते हैं। इसकी सूंडियां फलियों के छेद करके दानों को खा जाती हैं। चने के फली-छेदक की तरह इनसे भी फसल को बचाया जा सकता है।

गुरफली मक्खी : ये मक्खियां फलियों के अन्दर अंडे देती हैं। मैगट (बड़ा कीड़ा) फलियों में छेद करके बीजों को खाते हैं तथा फलियों में जीवाणु डालकर सड़ा देते हैं। ०.२ प्रतिशत की शक्ति के सल्फेट का छिड़काव करके मैगट को मारा जा सकता है।

उर्द और मूँग

बालदार इल्लियाँ : उर्द तथा मूंग, दोनों फसलों को खासकर इस कीड़े से अधिक हानि पहुंचती है। बादलदार सूंडियां पत्तियों को खाकर सिर्फ शिराएँ ही छोड़ती हैं। भयंकर →

www.vinoba.in

कुछ संस्मरण

रामायण में जो दूध की नदियों का वर्णन आता है वैसे तो नहीं, पर हरियाणा में दूध-मक्खन खूब मिलेगा। यहाँ के जानवरों को देखकर खुशी होती है। अच्छे तन्दुरुस्त हैं। गायें १५–१६ किलो दूध देती हैं और भैंसें २०–२२ किलो! यहाँ के लोग गाय कम पालते हैं। उनका कहना है कि गाय और भैंस की सेवा तो समान करनी पड़ती है, पर दूध व मक्खन में अन्तर आता है। गायों को चराना आवश्यक है, आजकल के लड़के चराना नहीं चाहते। अमीर लोग अपनी भैंस गरीब लोगों को पालने के लिए दे देते हैं। जब बड़ी हो जाती है तो बेचकर आधे-आधे पैसे ले लेते हैं या गरीब ही आधी कीमत में रख लेता है। इस प्रकार पशुओं की संख्या भी कम होती जा रही है।

× × ×

एक बहुत बड़े हाल में लड़के-लड़कियाँ बड़े ध्यान से विचार सुन रहे थे। बड़ी तत्परता से सवालों का जवाब देते जाते थे। ऐसा लगा, जैसे शहर के स्कूल में हों। एक सूरदास बच्चे का हाथ पकड़कर आये थे! पता चला कि ये गाँव के बहुत प्रतिष्ठित सज्जन हैं। चार वर्ष की आयु में इनकी बाह्य आँखें 'माता' के रोग में चली गयीं, पर ज्ञान-चक्षुओं से इन्होंने अपने आपको ग्रामसेवा में लगा दिया है। गाँव के लोगों से स्कूल के लिए ७०,००० रु० इकट्ठे किये। गाँव के बहुत-से व्यापारी कलकत्ते में रहते हैं। वह खुद उनके पास कलकत्ता गये और ३०,००० रु० ले आये। कुछ सरकारी मदद लेकर स्कूल का भवन खड़ा कर दिया। यहाँ की प्रधान अध्यापिका ने कहा, "वैसे तो मैं अपना तबादला करने का सोचती थी, पर इस गाँव का प्रेम देखकर मैं यहीं टिक गयी हूँ।" गाँव की गलियाँ गाँव के लोगों ने मिलकर बनायीं। यह पहला गाँव मिला, जिसमें महिलाओं के लिए पाखाने बनवाने की योजना गाँव के लोगों ने की है। किसी-न-किसीका हाथ पकड़कर ये भाई घूमते ही रहते हैं। सच है, जिनकी अन्तरात्मा जाग जाती है, वे कुछ करते हैं। बाकी हम तो आँखें होने पर भी अन्धे हैं, पाँव होने पर भी पंगु हैं और जागते हुए भी सोये हैं।

× × ×

एक शहर के भाई ने अपना कार्यक्षेत्र गाँव को बनाया है। गाँव में आते हैं, ठहरते हैं। एक स्कूल है, जिसमें बच्चों द्वारा खेती भी करवायी जाती है। एक तरफ जीवन को व्यवसाय के दाँव पर लगानेवाले साथी, दूसरी ओर गुलामी के बन्धनों में जकड़े हुए गाँव के लोग। फिर भी इनमें दृढ़ता है, क्योंकि इनकी प्रेरणा का स्रोत बाहर नहीं, अन्दर है। सेवक की यही कसौटी है!

एक भाई ने कहा, "मैंने इनके कहने से कुएँ पर बिजली के लिए रिश्वत नहीं दी। इसलिए आज तक मेरे कुएँ पर बिजली नहीं है। बाहरी तौर से तो मुझे काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है, फिर भी इस बात का एहसास होता है कि सच्चाई का रास्ता अलग है।" पहले यहाँ के लोग इनकी जान के दुश्मन बन गये थे, पर अब मानने लगे हैं।

× × ×

एक गाँव में पता चला कि एक भाई अपनी पत्नी और तीन बच्चों सहित काम की तलाश में यहाँ पहुँचा। उनके पास एक ही कम्बल था। कड़ाके की सर्दी में ठिठुरते हुए वह इस जन्म के दुःखों से छूट गया। गाँव के लोगों ने, विशेषकर गरीब लोगों ने आपस में मिलकर कुछ पैसा इकट्ठा करके उसके बाल-बच्चों को अपने गाँव में भेज दिया। लोगों को लगता है कि गरीब-गरीब की क्या मदद करेगा? दुखी दुखी का दुःख क्या दूर करेगा? क्या संसार का अनुभव इससे भिन्न नहीं है?

लोकयात्रा-टोली अब हिसार जिले की यात्रा पूरी कर जिन्द जिले की ओर बढ़ रही है। सर्दी अब कम हो गयी है। कर्नाटक में सरला बहिन तथा तारा भुटानी के साथ यात्रा करनेवाली लक्ष्मी बहन भी यात्रा में हैं।

—देवी रीग्वानी

→आक्रमण से पूरी फसल पत्तीहीन हो जाती है। ५ प्रतिशत बी०एच०सी० और पाइरो डस्ट को ३ : १ के अनुपात में मिलाकर २५ पौंड प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़कने या ०.०४ प्रतिशत फालोडाल को १०० गैलन पानी में घोलकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करके इस कीड़े को नष्ट किया जा सकता है।

सींगदार सूंडियाँ : सूंडियाँ पौधों को पत्तीहीन बना देती हैं। ये सूंडियाँ पत्तियों को खाती हैं अंडों तथा सूंडियों को पत्तियों पर से पकड़कर नष्ट किया जा सकता है। कार्बनिक कीटनाशक दवाओं के गाढ़े घोल के प्रयोग से सूंडियाँ नष्ट हो जाती हैं।

("खेती" से साभार)

नगरों को ग्राम-जीवन का नमूना अपना लेना चाहिए व उन्हें पुष्ट करना चाहिए।

—महात्मा गांधी

'गाँव की बात' : वार्षिक चन्दा : चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे
सम्पादक : राममूर्ति : सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी–१